भोयरी और पोवारी भाषाओं का इतिहास और अंतर

परिचय : भोयरी और पोवारी भाषाओं का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रहा है। यह दोनों भाषाएँ अलग-अलग समुदायों से संबंधित हैं और भारत के विभिन्न भाषाई सर्वेक्षणों में इन्हें भिन्न-भिन्न वर्गों में रखा गया है। इन दोनों भाषाओं की उत्पत्ति, विकास और सांस्कृतिक संदर्भों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि वे कभी भी समान नहीं रही हैं।

भाषाई वर्गीकरण और सर्वेक्षण : भाषा वैज्ञानिक जॉर्ज अब्राहम गियर्सन द्वारा किए गए ऐतिहासिक भाषाई सर्वेक्षणों में भोयरी और पोवारी भाषाओं को अलग-अलग भाषाई समूहों में रखा गया है। भारत सरकार द्वारा समय-समय पर की गई भाषाई जनगणनाओं और अध्ययन रिपोर्टों में भी यह स्पष्ट किया गया है कि दोनों भाषाएँ भिन्न समुदायों से जुड़ी हुई हैं।

1. **भोयरी भाषा** – यह भाषा भोयर समाज की प्रमुख भाषा रही है और इसका विकास स्वतंत्र रूप से हुआ है।
2. **पोवारी भाषा** – यह भाषा पंवार(पोवार) समाज की अपनी विशिष्ट भाषा है और इसका भोयरी भाषा से कोई संबंध नहीं है।

इतिहास और प्रवासन : ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो भोयर और पंवार(पोवार) समुदायों का मध्यभारत में आगमन अलग-अलग कालखंडों में हुआ था। इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और परंपराएँ भी भिन्न रही हैं।

- **भोयर समाज** – ऐतिहासिक रूप से यह समुदाय अपनी विशिष्ट परंपराओं और रीति-रिवाजों के साथ मध्य भारत में स्थापित हुआ। इसकी सांस्कृतिक पहचान भोयरी भाषा से जुड़ी हुई है।
- **पंवार(पोवार) समाज** – पंवार(पोवार) समाज की ऐतिहासिक जड़ें प्राचीन क्षत्रिय परंपराओं में मिलती हैं। नगरधन से अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में वैनगंगा क्षेत्र तक इनके स्थानांतरण का उल्लेख किया गया है।

सांस्कृतिक और सामाजिक भिन्नताएँ : भोयर और पंवार(पोवार) समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना भी अलग-अलग रही है। इन दोनों समाजों की धार्मिक मान्यताएँ, रीति-रिवाज और परंपराएँ स्वतंत्र रूप से विकसित हुई हैं।

1. **भाषा और साहित्य** – दोनों भाषाओं का साहित्य और मौखिक परंपराएँ भिन्न हैं।

2. **समुदायों की सामाजिक संरचना** – विवाह पद्धति, धार्मिक अनुष्ठान और लोककथाओं में भी स्पष्ट भिन्नता पाई जाती है।

इतिहास को विकृत करने के प्रयास हाल के वर्षों में कुछ इतिहासकार और शोधकर्ता इन दोनों भाषाओं को एक दिखाने का प्रयास कर रहे हैं, जो ऐतिहासिक रूप से मान्य नहीं है।

- ऐतिहासिक साक्ष्यों और भाषाई विश्लेषण के आधार पर यह प्रमाणित हो चुका है कि ये दोनों भाषाएँ और इनसे जुड़े समुदाय सदैव अलग रहे हैं।
- भारतीय जनगणना और भाषाई सर्वेक्षणों में इन्हें अलग-अलग समूहों में रखा जाना इस बात का प्रमाण है कि वे कभी एक नहीं थीं।

निष्कर्ष : भोयरी और पोवारी भाषाएँ अलग-अलग समुदायों की भाषाएँ हैं, जिनका स्वतंत्र विकास हुआ है। इतिहास और भाषा विज्ञान दोनों इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि इनका एकीकरण करने का कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है। इसलिए, इन भाषाओं को जबरन एक दिखाने के प्रयासों का विरोध किया जाना चाहिए, ताकि वास्तविक इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रह सके।

भोयरी भाषा का परिचय

LINGUISTIC SURVEY OF INDIA

VOL. IX

INDO-ARYAN FAMILY

CENTRAL GROUP

बैतूल के भोयरों का दावा है कि वे धारानगरी से आए हैं और टूटी-फूटी मालवी भाषा बोलते हैं। छिंदवाड़ा के भोयरों ने अपनी मूल मावली भाषा को बरकरार रखा है, लेकिन उसी प्रकार उन्होंने इसे मराठी के साथ मिला दिया, जिससे यह एक टूटी-फूटी भाषा (पैटॉस) बन गई है। कुछ पंक्तियाँ "प्रोडिगल सन" (उद्धृत पुत्र) की कहानी से ली गई हैं, जिससे इसका उदाहरण दिया गया है। इस भाषा को बोलने वालों की संख्या लगभग 11,000 आंकी गई है।

भाषाई वर्गीकरण: भोयरी

हिंद-आर्य परिवार

राजस्थानी (मावली - भोयरी की टूटी-फूटी बोली)

BHŌYARĪ OF CHHINDWARA.

We have just seen that the Bhōyars of Betul claim to have come from Dhārā-nagarī, and speak a broken Mālvī. In the adjoining district of Chhindwara the local Bundēlī is often mechanically mixed with Marāṭhī, and examples have been given in Vol. IX., Pt. I. The Bhōyars of Chhindwara have retained their original Mālvī, but, in the same way, have mixed it with Marāṭhī, so that it has become a broken patois. A few lines of a version of the Parable of the Prodigal Son will be sufficient to illustrate it. The number of speakers is estimated at 11,000. Note the way in which a final *ē* is often represented by *a*. This is borrowed from Nīmāḍī and also agrees with the practice of the Marāṭhī of Berar.

[No. 51.]

INDO-ARYAN FAMILY. CENTRAL GROUP.

RĀJASTHĀNĪ.

MĀLVĪ (BHŌYARĪ BROKEN DIALECT). (DISTRICT CHHINDWARA).

कोनी एक मानुस-ला दुई बेटा होता। ते-म-को नान्हो बाप-ला कहन लाग्यो बाबा म-ला म्हरा हिस्सा-को धन आय-हे त्यू दे। तब आ-ने धन ओ-ला बाट-दियो। तब थोड़ा दिन-भ नान्हो बेटा समधो जमा कर-कन दूर मुलुक-म गयो आउर वहाँ वाहियात-पना कर-कन आपलो पेसो उडायो। तब ओ-न अवधो खर्चा उपर वना मुलुक-म मोठो दुष्काल पड्यो। ओ-ना विपत पडन लागी। तब वो वोन मुलुक-मा एक भला मानुस-के जवर रह्यो॥

TRANSLITERATION AND TRANSLATION.

Kōnī ēk mānus-lā duī bēṭā hōtā. Tē-ma-kō nānhō
Certain one man-to two sons were. Them-in-of the-younger

bāp-lā kahan lāgyō, 'bābā, ma-lā mharā hissā-kō dhan āy-hē,
the-father-to to-say began, 'father, me-to my share-of wealth comes,

tyū dē.' Tab ā-nē dhan ō-lā bāṭ-diyō. Tab thōṛā
that give.' Then him-by wealth him-to was-divided. Then a-few

dina-bh nānhō bēṭā sam'dhō jamā kar-kan dūr
days-after the-younger son all together made-having a-distant

muluk-ma gayō, āur wahā̃ wāhiyāt-panā kar-kan āp'lō paisō
country-in went, and there riotousness made-having his-own money

uḍāyō. Tab ō-na aw'dhō kharchā-upar wanā muluk-ma
was-squandered. Then him-to all on-being-spent-after that country-in

mōṭhō dushkāl paḍyō. Ō-nā bipat paḍan lāgī. Tab wō wōn
great famine fell. Him-to difficulty to-fall began. Then he that

muluk-mā ēk bhalā mānus-kē jawar rahyō.
country-in one gentle man-of near lived.

पोवारी भाषा का परिचय

jē-lā	ḍukar	khāt-rahē	ap'rō	pēṭ	bharat-rahē,	aur	ō-lā	kachhu
which	*swine*	*used-to-eat*	*his-own*	*belly*	*used-to-fill,*	*and*	*him-to*	*anything*

kōī	nahī̃	dēt-rahē.
anybody	*not*	*used-to-give.*

Pŏwārī is the language of the Pŏwārs, an agricultural tribe which traces its origin to the Rajput Pramaras of Malwa, whence the members of the caste have spread over northern India and in later times formed the extensive colonies which we find in the Waingangā valley at the present day. The traditional home of these members of the tribe is Dhar in Central India. Although Pŏwārs are found all over the Central Provinces, a distinct Pŏwār dialect has been reported only from the Districts of Chhindwara, Balaghat, and Bhandara. Further inquiry shows that even this return erred by excess, for the Pŏwārs of Chhindwara are now stated to have no peculiar dialect of their own. The number of Pŏwārs in Bhandara and Balaghat are, according to the Census of 1891, as follows :—

Balaghat	43,564
Bhandara	70,040

The number of speakers of Pŏwārī returned from these districts is much less than the above, *viz.*,—

Balaghat	41,300
Bhandara	1,700
TOTAL	43,000

Pŏwārī, like Marārī, cannot be properly called a dialect. It is really a jargon, the basis of which is the Baghēlī which we find in Mandla, mixed up very freely with forms coming from the original home of the tribe in Western Rajputana, and with Marāṭhī. For instance, in the following specimens, words like *dēis*, he gave; *lēis*, he took, are Baghēlī; but *kōnhī*, a certain; *hōtā*, they were; *āparō* or *aparō*, own; and the case sign *-lā*, are corruptions of Marāṭhī; and *sē*, is; and *khan*, in *kar-khan*, having done, come from Western Rajputana. Note also the use of *nē* with a Baghēlī past tense, which we have noted in Marārī.

Two short specimens of Pŏwārī are given, one from Balaghat, and the other from Bhandara.

पोवारी भाषा

पोवारी भाषा **पोवार(पंवार) समाज** की भाषा है, जो एक कृषि प्रधान जाति है। इसका मूल मालवा के **राजपूत परमारों** से जुड़ा हुआ है। इस जाति के लोग उत्तर भारत में फैले और बाद में वैनगंगा घाटी में बड़े उपनिवेशों की स्थापना की, जो आज भी वहाँ मौजूद हैं। इस समुदाय के लोगों का पारंपरिक निवास **मध्य भारत के धार** क्षेत्र में था। हालाँकि **पोवार(पंवार)** पूरे मध्य प्रांतों में पाए जाते हैं, लेकिन एक विशिष्ट **पोवारी बोली** केवल **छिंदवाड़ा, बालाघाट और भंडारा** जिलों में दर्ज की गई है।

1891 की जनगणना के अनुसार बालाघाट और भंडारा में पोवार(पंवार) समुदाय की जनसंख्या इस प्रकार थी:

- **बालाघाट** – 43,564
- **भंडारा** – 70,040

हालाँकि, इन जिलों में पोवारी भाषा बोलने वालों की वास्तविक संख्या इससे काफी कम पाई गई:

- **बालाघाट** – 41,300
- **भंडारा** – 1,700
- **कुल** – 43,000

भाषाई संरचना और अन्य भाषाओं से संबंध

पोवारी भाषा की तुलना मराठी से की जाती है, लेकिन इसे पूर्ण रूप से बोली नहीं कहा जा सकता। यह वास्तव में **बघेली भाषा** पर आधारित एक मिश्रित भाषा है, जिसे **मंदला जिले** में पाया जाता है। यह पश्चिमी राजस्थान से आए मूल जनजातीय रूपों और मराठी भाषा के मिश्रण से विकसित हुई है।

उदाहरण के लिए, कुछ शब्द जैसे:

- "**दिस"** (उसने दिया) और "**लिस"** (उसने लिया) **बघेली भाषा** से लिए गए हैं।
- "**कोहिस"** (एक निश्चित) और "**हौता"** (थे) मराठी भाषा के विकृत रूप हैं।
- "**अपरो" या "अपारा"** (स्वयं का) और "**-आ" प्रत्यय** मराठी से लिए गए हैं।
- "**ऐ"** (है) और "**खान"** (कर-खान, किया) पश्चिमी राजस्थान की भाषाओं से प्रभावित हैं।

इसके अलावा, **बघेली भाषा** के भूतकाल में प्रयुक्त "ने" शब्द का प्रयोग **पोवारी भाषा** में भी पाया गया है। इस दस्तावेज़ में **बालाघाट और भंडारा जिलों** की दो छोटी पोवारी भाषा की नमूना पंक्तियाँ दी गई हैं।

[No. 40.]

INDO-ARYAN FAMILY. MEDIATE GROUP.

EASTERN HINDĪ.

BAGHĒLĪ (PŌWĀRĪ BROKEN) DIALECT. (DISTRICT BALAGHAT.)

कोन्हौ मानुस-का दुइ बेटा होता। ओ-मा-ल्हे लाहनो-ने अपरे बाप-ला कहिस हे बाबा सम्पति-मा-ल्हे जो मोरो हिस्सा से ऊ दे-देव। मग वो-ने उन-ला आपरो धन बाँट देइस। जुग रोज नहीँ भया, नाहनो बेटा सब येकुजिया कर-खन दूर देस-ला चलो गयो। वहाँ जाय-खन लुचपना-माँ सब सम्पति खोय देइस। जब वो सब उड़ाय देइस मग उन देस-में अकाल पडेव। अखिन ऊ गरीब भै गयो। अखिन ऊ जाय-खन वने देस-के रहनार-मा-ल्हे एक घरे रहन लगेव। जे-ने ओ-ला आपलो खेत-माँ डूकर चरावन-ला पहुँचाइस। अखिन ऊ उन खोलपा-मा-ल्हे जे-ला डूकर खात होतो, आपन पेट भरन चाहोत होतो अखिन कोन्हो नही ओ-ला काही देत होतो॥

TRANSLITERATION AND TRANSLATION.

Kōnhī mānus-kā dui bēṭā hōtā. Ō-mā-lhē lāh'nō-nē ap'rē
Certain man-of two sons were. Them-in-from the-younger-by his-own

bāp'lā kahis, 'Hē bābā, sampati-mā-lhē jō mōrō hissā sē ū
father-to said, 'Oh father, the-property-in-from what my share is that

dē-dēw.' Mag wō-nē un'lā āp'rō dhan bā̃ṭ dēis. Jug
give.' Then him-by them-to his-own wealth dividing gave. Many

rōj nahī̃ bhayā, nāh'nō bēṭā sab yēkujiyā kar-khan dūr
days not became, the-younger son all together having-made distant

dēs-lā chalī gayō. Wahā̃ jāy-khan luch'panā-mā̃ sab
country-to having-gone went. There having-gone riotousness-in all

sampati khōy dēis. Jab wō sab uṛāy dēis, mag un
property wasting he-gave. When he all squandering gave, then that

dēs-mē̃ akāl paḍew, akhin ū garīb bhai gayō. Akhin ū
country-in famine fell, and he poor becoming went. And he

jāy-khan wanē dēs-kē rah'nār-mā-lhē ēk gharē rahan lagew.
having-gone that country-of citizen-among one into-house to-live began.

Jē-nē ō-lā āp'lō khēt'-mā̃ ḍūkar charāwan-lā pahũchāis. Akhin
Whom-by him his-own field-into swine to-feed sent. And

ū un khōl'pā-mā-lhē jē-lā ḍūkar khāt hōtī āpan pēṭ
he that husks-in-from which-to the-swine eating were he belly

bharan chāhōt hōtō, akhin kōnhī nahī ō-lā kāhī dēt hōtō.
to-fill wishing was, and any-body not him-to anything giving was.

[No. 41.]

INDO-ARYAN FAMILY. MEDIATE GROUP.

EASTERN HINDĪ.

BAGHĒLĪ (PŌWĀRĪ BROKEN) DIALECT. (DISTRICT BHANDARA.)

एक मानुस-ला दुई बेटा होता। ओ-को नहानो बेटा बाबा-ला कहोत होतो, बाबा, मोरो माल-मत्तो-का हिसा मोरो तोड दो। मंग आपरो माल-मत्ता बाट देइस। मंग धाकटो बेटा माल-मत्ता जमा कर-कन दूर देस-को निकल गयो। आनिक अपरो मन-ले बरतावा कर-लेइस, सरबी संपत उडाय देइस। वोतई जमा खरच डाइस। ओन मुलुख-मो बडा दुकार पड्यो होतो ओन बात-सो लंगी जा-से वो-ला। ओ-को बाद ओन मुलुख-को एक मानुस-के जवर रह्यो। ओन डूकर चरावन अपरे खेत-म धाडिस। ओ-ने डुकरन फोल खाइस। उच फोल खाय-के अपरो पेट भरू अस ओन दिल-म अपर सोचीस। आनिक कोइन ओ-ला काही नही देइस ॥

TRANSLITERATION AND TRANSLATION.

Ēk mānus-lā duī bēṭā hōtā. Ō-kō nahānō bēṭā bābā-lā
One man-to two sons were. His younger son the-father-to

kahōt-hōtō, 'Bābā, mōrō māl-mattō-kā hisā mōrō tōḍ dō.'
said, 'Father, my property-furniture-of share me breaking give.'

Maṅg āp'rō māl-mattā bāṭ dēis. Maṅg dhāk'ṭō bēṭā māl-mattā
Then his-own property dividing gave. Then the-younger son property

jamā-kar-kan dūr dēs-kō nikal-gayō. Ānik ap'rō man-lē
collecting distant country-to went-away. And his-own mind-from

bar'tāwā kar-lēis, sar'bī sampat uḍāy-dēis. Wōtaī jamā
dealings did, all fortune squandered-away. There the-whole-substance

kharach-ḍāis. Ōn mulukh-mō baḍā dukār paḍyō-hōtō. Ōn bāt-sō
he-spent-away. That country-in great famine fell. That fact-from

laṅgī jā-sē wō-lā. Ō-kō bād ōn mulukh-kō ēk mānus-kē jawar
starvation occurred him-to. That after that country-of one man-of near

rahyō. Ōn ḍūkar charāwan ap'rē khēt-ma dhāḍis. Ō-nē ḍuk'ran
lived. Him-by swine to-feed his-own field-in sent-him. Him-by swine

phōl khāis. 'Uch phōl khāy-kē ap'rō pēṭ bharū,' as ōn
husks used-to-eat, 'Those-very husks eating my-own stomach I-may-fill,' so by-him

dil-ma apar sōchīs. Ānik kōin ō-lā kāhī nahī dēis.
mind-in himself he-thought. There anyone-by him-to anything not gave.

2 A 2

पोवार और भोयर जाति का इतिहास और अंतर

Rev. M.A. Sherring की पुस्तक **"Hindu Tribes and Castes" (Vol. II, 1879)** में **पंवार (पोवार) जाति को राजपूत समूह** में शामिल किया गया है, जबकि **भोयर जाति को कृषक जातीय समूह** में रखा गया है।

1. पोवार(पंवार) जाति : THE RAJPUT TRIBES

PART II.—THE TRIBES AND CASTES OF THE CENTRAL PROVINCES AND BERAR.

CHAPTER I.

SECTION I.—THE BRAHMANICAL TRIBES.

SECTION II.—THE RAJPOOT TRIBES.

8. *The Powar, Pramâra, or Ponwar Tribe.*

The Pramâra or Ponwar kingdom of Malwa probably extended to the western portion of the Narbuddha Valley, seven or eight hundred years ago. Nagpore was at one time apparently governed by the Pramâras of Dhur.

They are a numerous agricultural people in these provinces. Those by the Wyngunga are supposed to be a branch of the Devanuggur Powars of Malwa, who quitted their country in the reign of the Emperor Aurungzebe. As a reward for assistance rendered to the Bhonslas in an expedition to Cuttack, they received lands to the west of the Wyngunga. They also spread out over the northern part of the Wyngunga district, in the *Parganahs* of Thurorah, Kompta, Langee, and Rampylee ; and over fifty years ago entered the waste lands. The tribe is now in the possession of three hundred and twenty-six villages.

The Powars are exclusively devoted to agriculture, and are described as hard-working and industrious, but, at the same time, deceitful, untrustworthy, and litigious (*a*).

The Ponwars are by far the most numerous of the Rajpoot race in this tract of India, and form a community not far short of one hundred thousand persons. Forty-five thousand of these are at Bhandâra, thirty thousand at Seonee, and nearly fourteen thousand at Balaghat ; the remaining districts possessing very few of the tribe. The Ponwars came from Malwa to Nundurdhan, near Ramtek, a little more than a hundred years ago. From this place

8. पंवार, परमार या पोंवार जाति

*परमार या पंवारों का मालवा राज्य संभवतः सात या आठ सौ वर्ष पहले नरबद्दा घाटी के पश्चिमी भाग तक विस्तृत था। किसी समय नागपुर पर **धार** के परमारों का शासन था।*

ये इस क्षेत्र में एक बड़ी कृषि-आधारित जाति के रूप में विद्यमान हैं। वैनगंगा क्षेत्र के पंवारों को मालवा के देवनगर पंवारों की शाखा माना जाता है, जिन्होंने मुगल सम्राट औरंगजेब के शासनकाल के दौरान अपना मूल स्थान छोड़ दिया था। भोंसले राजाओं को कटक अभियान में दी गई सहायता के बदले में उन्हें वैनगंगा के पश्चिम में भूमि प्रदान की गई। इसके अलावा, वे वैनगंगा जिले के उत्तरी भाग में फैले, विशेष रूप से थुरोराह, कोम्प्टा, लांगरी और रामपाइली परगनों में। लगभग पचास वर्ष पूर्व उन्होंने बंजर भूमि पर अधिकार कर लिया। वर्तमान में यह समुदाय 326 गाँवों का स्वामी है।

पंवार पूरी तरह से कृषि पर आश्रित हैं और इन्हें मेहनती तथा परिश्रमी माना जाता है, लेकिन साथ ही इन्हें कपटी, अविश्वसनीय और वाद-विवादी भी बताया गया है।

पोंवार इस क्षेत्र में राजपूत वंश की सबसे बड़ी जाति है और इनकी जनसंख्या एक लाख के करीब है। इनमें से पैंतालीस हजार भंडारा में, तीस हजार सिवनी में और लगभग चौदह हजार बालाघाट में हैं; अन्य जिलों में इनकी संख्या बहुत कम है।

पोंवार मालवा से नुंदरधन (रामटेक के पास) लगभग सौ वर्ष पहले आए थे। यहाँ से वे धीरे-धीरे अंबाघरी और चांदपुर (वैनगंगा के पूर्व में) तक फैल गए। सिवनी में उन्होंने सबसे पहले लारगढ़ी और प्रतापगढ़ पर कब्जा किया। वे जंगल साफ करने, तालाब खोदने और बाँध बनाने में बहुत सफल रहे।

इन प्रांतों की पिछली जनगणना रिपोर्ट में पोंवारों को कृषि जातियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और राजपूतों से अलग बताया गया है, जो कि एक त्रुटि है। वे वास्तविक राजपूत हैं। वे एक अत्यंत उद्यमशील जाति हैं। पोंवार और लोधी बालाघाट जिले के प्रमुख उपनिवेशी (बसने वाले) हैं।

----

2. भोयर जाति(Bhoyar) : THE AGRICULTURAL TRIBES

CHAPTER II.

SECTION I.—THE AGRICULTURAL TRIBES.

7. *Bhoyar*.

An industrious race of cultivators from Upper India, settled chiefly in the Multai *pargannah* of Baitool, and in Chindwara. They are addicted to strong drink, but are hard-working cultivators. They probably came from Northern India. There is a considerable community of Bhoyars in Wardha.

(*a*) Report on the Land Revenue Settlement of Raepore, by Mr. Hewitt, B.C.S., pp. 32 and 38. Settlement Report of Hoshungabad, by Mr. C. A. Elliott.

7. भोयर

उत्तर भारत से आई एक मेहनती कृषक जाति, जो मुख्य रूप से बैतूल के मुलताई परगना और छिंदवाड़ा में बसी हुई है। ये लोग मादक पदार्थों के सेवन के आदी हैं, लेकिन परिश्रमी कृषक माने जाते हैं। संभवतः वे उत्तरी भारत से आए थे। वर्धा में भोयरों की एक बड़ी आबादी निवास करती है।

निष्कर्ष : इस अंतर से यह स्पष्ट है की प्राचीन कल में पोवार और भोयर जाति का न केवल इतिहास भिन्न -भिन्न है अपितु दोनों ही अलग-अलग क्षेत्रों से आये है।